DR. Priti Ranjan
Deptt of History
H.D. Jain college

B.A Part - I
Paper - 2
Topic — Sansad Ka gathan.

-4/

रॉकर नं० —

→ सत्रहवीं में इंग्लैण्ड की स्टुअर्ट राजाओं तथा पार्लियामेंट में परस्पर संघर्ष के क्या कारण थे?

17 वीं शताब्दी में इंग्लैंड में राजा और संसद के बीच संघर्ष के अनेक कारण थे जो मौलिक या दूरवर्ती कारण निम्नलिखित है :—

बाह्य आक्रमणों का अभाव ⇒

प्राय: ऐसा कहा जाता है कि एक अंग्रेज एक समय में एक ही चीज सोचता है। ठीक इसी प्रकार एलिजाबेथ ने अपने शासन काल में सिर्फ विदेशी आक्रमण पर ही उनका ध्यान था आन्तरिक मामलों या संवैधानिक मामलों की ओर किसी का ध्यान नहीं था। किन्तु 1603 तक सारे विदेशी खतरे जाते रहे। अब अंग्रेज अपने संवैधानिक मामलों में अधिक दिलचस्पी लेने लगे। वे निरंकुश राजतंत्र की आलोचना करने लगे और संसद की सर्वोच्चता चाहने लगे।

मध्य वर्ग का उदय ⇒

17 वीं शताब्दी में अंग्रेजों की स्वतन्त्रता नाममात्र को थी। उन्हें स्वतन्त्रता दिलाने के लिए सामन्तों या अन्य आम लोगों ने भाग नहीं लिया, अपितु मध्य वर्ग ने हाथ बटाया जिसमें व्यापारी वकील आदि थे। वे स्वतन्त्र संयमी धैर्यशील एवं अपने कामों में लगे रहते थे। राजा और संसद के प्रारंभिक काल में लोकसभा के वकीलों ने शब्द-युद्ध में प्रमुख भाग लिया। बेकन ने उन्हें लोकसभा का स्वर वर्ग और शेष सदस्यों को व्यंजन वर्ग कहा है।

सम्प्रभुता का प्रश्न ⇒

14 वीं शताब्दी में संसद की प्रधानता थी किन्तु 15 वीं और 16 वीं शताब्दियों में राजा की प्रधानता थी। दोनों दल वालों के पास अपनी-अपनी प्रधानता के लिए प्रमाण थे। अतः यह एक विवादास्पद प्रश्न था कि देश की शासन-व्यवस्था में राजा प्रधान है या संसद। इस प्रकार, सम्प्रभुता के प्रश्न पर विधान का स्पष्ट न होना संघर्ष का एक मौलिक कारण था।

संसद की दृढ़ स्थिति ⇒

एलिजाबेथ के शासन काल से ही रानी और संसद के बीच मधुर सम्बन्ध नहीं था। यह ठीक है कि ग्यारह बार संसद

की बैठकें हुई, किन्तु किसी एक का भी अधिवेशन छह सप्ताह से अधिक नहीं हुआ। वह अपनी बैठकें में कोई नया कानून बनाने के लिए नहीं बल्कि शासन-संचालन के लिए धन की मंजूरी देने के लिए बुलाती थी। तो भी लोकसभा कभी-कभी अपनी झगड़ालू प्रकृति का परिचय दे देती थी। अतः हम कह सकते हैं कि अब वह समय आ गया था कि दोनों अपने-अपने अधिकारों और कर्तव्य को पहचानने लगे थे। और जेम्स प्रथम के राज्यारोहण के साथ ही यह समस्या उठ खड़ी हुई। उसके राज्यकाल के प्रथम वर्ष में ही लोकसभा ने यह दावा किया "अब यह उन कार्यों पर ध्यान देगी जिनकी इसने एलिजाबेथ के शासनकाल में उपेक्षा की थी।"

इसके तत्कालीन कारण ⇒

राजा के दैवी अधिकार →

ट्यूडर काल (1485-1603) में राजा के विशेषाधिकार का क्षेत्र और भी बढ़ गया। 1603 में गद्दी पर आते ही जेम्स ने राजा के विशेषाधिकारों का दावा किया। उसका विचार था कि राजा पृथ्वी पर ईश्वर का अवतार है। किन्तु संसद ने जेम्स के इस दैवी अधिकार का घोर विरोध किया। उसका कहना था कि राजा देश के कानूनों के नीचे है और वह उनके विरुद्ध नहीं जा सकता है। अतः राजा और संसद में इस विषय को लेकर संघर्ष होना अनिवार्य हो गया।

धार्मिक कारण →

इन दिनों संसद में प्यूरिटन और काल्विन सम्प्रदाय वाले सदस्यों की संख्या काफी थी। वे गणतंत्रात्मक विचार वाले थे और चर्च में आमूल परिवर्तन लाना चाहते थे। किन्तु, जेम्स कैथोलिक से सहानुभूति रखता था और आर्मिनियन मत का प्रचार करना चाहता था। उसने अपने हितों की रक्षा के लिए बिशप की सहायता ली। उसकी नीति थी "बिशप नहीं तो राजा नहीं"।

आर्थिक समस्या →

राजा और संसद के बीच संघर्ष का एक प्रधान कारण आर्थिक प्रश्न था। जेम्स अधिक खर्चीला था किन्तु खजाना खाली था। एलिजाबेथ चार लाख पौंड राष्ट्रीय कर्ज छोड़कर इस दुनिया से चल बसी थी। इसके अतिरिक्त 16 वीं और 17 वीं

व्यापारियों ने अमेरिका से अधिक मात्रा में सोना और चाँदी यूरोप आने से द्रव्य की कीमत पहले से कम हो गई थी। पहले राजा राज्य - भूमि सामन्ती धन कर्ज एवं चुंगी से शासन का खर्च चलाते थे। 17 वीं शताब्दी में परिस्थित बदल गई। इस आय से व्यय को पूरा करना कठिन हो गया। कर लगाने का अधिकार संसद को था। धन की मंजूरी के लिए संसद बुलानी पड़ती थी। संसद ने यह शर्त रखी कि धन की स्वीकृति के लिए पहले शिकायतें दूर की जाएँ। जेम्स ने उनकी शिकायतें दूर करने की कोशिश नहीं की और बिना संसद की स्वीकृति लिए धन बटोरने के साधन अपनाए। और इधर आर्थिक नीति का मतभेद चार्ल्स और उसकी प्रत्येक पार्लियामेंट के बीच झगड़े का कारण था। पार्लियामेण्ट राजा को पर्याप्त धन देना नहीं चाहती थी और चार्ल्स बिना पार्लियामेण्ट की स्वीकृति के विभिन्न करों को लगाता और वसूल करता था।

संसद के विशेषाधिकार →

संसद के कई विशेषाधिकार थे। जैसे- संसद के सदस्यों को स्वतन्त्रतापूर्वक बोलने कैद न होने की स्वतन्त्रता चुनाव - सम्बन्धी झगड़ों का फैसला करने आदि के अधिकार प्राप्त थे। संसद का विचार था कि ये उसके पुराने और जन्मसिद्ध अधिकार है और उन्हें कोई अपर अपहरण नहीं कर सकता है। परन्तु स्टुअर्ट राजाओं का कहना था कि इसे वे अधिकार राजा की कृपा और आज्ञा से प्राप्त हुए हैं तथा वह जब चाहे तब उन्हें वापस ले सकता है। संसद इसे मानने को तैयार न थी। ऐसी हालत में दोनों में संघर्ष होना अनिवार्य था।

कानून - निर्माण का प्रश्न →

पहले राजा संसद से मिलकर कानून बनाता था। समय- समय पर वह अध्यादेश और उद्घोषणाएँ जारी करता था जो कानून की तरह मान्य थे। किन्तु ये कार्य वैधानिक सीमाओं के अंतर्गत ही होते थे। जेम्स ने वैधानिक सीमाओं की परवाह नहीं की और आवश्यकता से अधिक अध्यादेश निकाले और राजकीय अदालतों द्वारा कार्य किया। और जब चार्ल्स 1629 ई० में संसद भंग किया तो संसद ने राजा के सामने तीन प्रस्ताव स्वीकार किया

जो व्यक्ति –
धर्म में परिवर्तन करने का प्रयत्न करेगा
चीनी कर लगाने का प्रस्ताव प्रस्ताव करेगा या,
पार्लियामेण्ट द्वारा स्वीकृत करों के अतिरिक्त कोई कर
देगा – वह देशद्रोही होगा।
चार्ल्स ने पार्लियामेण्ट के नौ नेताओं को कैद कर लिया
जिनमें इलियट भी सम्मिलित था। ऐसा करने से संसद
भंग हो गई और इसने राजा का विरोध करना शुरु
किया।

जेम्स प्रथम का चरित्र →

जेम्स का चरित्र भी झगड़े का एक कारण बना। उसने परिस्थिति को समझने का प्रयत्न नहीं किया। यह सत्य है कि उसने उन्हीं अधिकारों का दावा किया जिसका उपयोग ट्यूडर राजाओं ने किया था। अन्तर यह था कि जहाँ वे इसका व्यावहारिक लाभ उठाकर सन्तुष्ट थे, वहाँ जेम्स प्रथम उन अधिकारों को सैद्धान्तिक आधार पर मानने के लिए तैयार था। ट्यूडर राजा निरंकुश होते हुए भी किसी निश्चित सिद्धान्त के समर्थक नहीं थे परन्तु जेम्स ने प्रधानता की परिभाषा पर बार-बार जोर दिया। अतः राजा और संसद के बीच संघर्ष होना अनिवार्य हो गया।

विदेश-नीति →

इस समय यूरोप में धार्मिक संघर्ष चल रहा था। कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट देशों में बड़ी दुश्मनी थी। 1618 में तीस वर्षीय युद्ध (1618-1648) शुरु हो गया। इंगलैण्ड के अधिकांश लोग प्रोटेस्टेंट थे। उनका और संसद का विचार था कि जेम्स प्रोटेस्टेंट दल के समर्थन करे। परन्तु राजा ने इसकी अवहेलना की तथा फ्रांस और स्पेन आदि कैथोलिक देशों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाए रखा। संसद ने इसका विरोध किया। जेम्स अपने पुत्र चार्ल्स प्रथम की शादी स्पेन की राजकुमारी इनफेटा डोना मेरिया से करना चाहता था। संसद ने उसकी इन नीति का बड़ा विरोध किया। संसद और राजा के बीच संघर्ष का मौलिक कारण संवैधानिक सर्वोच्चता को अक्षुण्ण बनाए रखना चाहता था। प्रश्न था कि राजा किस अधिकार से शासन करता है – दैवी अधिकार से या संसद के कानून से?

सरा प्रश्न था कि राजा के विशेषाधिकार क्या है। अंतिम प्रश्न था कि राजसत्ता कहाँ निवास करती है। 17 वीं शताब्दी के इंगलैण्ड का इतिहास इन्हीं संवैधानिक प्रश्नों का इतिहास है। इन प्रश्नों के उत्तर चार्ल्स के ग्यारह वर्ष के अनियंत्रित शासन (1629-1640) गृहयुद्ध (1642-1648) पुनर्स्थापन (1660) एवं गौरवपूर्ण क्रान्ति (1688) में मिलते हैं। अधिकार विधेयक और निर्णायक अधिनियम ने यह निश्चित कर दिया कि देश की शासन-व्यवस्था में संसद सर्वोच्च है। अतः हम कह सकते हैं कि इंगलैण्ड की जनता में आत्मविश्वास और भविष्य के प्रति विश्वास की भावना कूट कूटकर भर गयी थी लेकिन जनता का यह आत्मविश्वास प्रथम जेम्स के ही लिए ही नहीं वरन् सभी स्टुअर्ट शासकों के लिए खतरनाक सिद्ध हुआ। यही नहीं, एलिजाबेथ के समय ही पार्लियामेण्ट ने रानी की इच्छा के विरुद्ध धर्म सम्बन्धी मामलों पर बहस करना आरम्भ कर दिया था और इस बात का प्रमाण था कि रानी एलिजाबेथ के अन्तिम समय में राजा और पार्लियामेण्ट का सहयोग समाप्त होना आरम्भ हो गया। यही स्थिति धीरे-धीरे स्टुअर्ट शासक और संसद के बीच झगड़ा शुरू होना लगा। और फिर धर्म, राजा पार्लियामेण्ट के बीच झगड़े का एक बड़ा कारण बन गया।